IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी बाल कविता को विकास यात्रा का प्रारम्भिक चरण

डॉ. तृप्ति उकास
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शासकीय महाकोशल कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर, म.प्र.

सारांश

एक अच्छा सामाजिक–साहित्यिक परिवेश बच्चों में मूल्य चेतना की प्रेरणा जागृत करने में सहायक होता है। बाल काव्य लिखने वाले कवि–कवयित्री सदैव उच्च गुणवत्तायुक्त विषय सामग्री एवं प्रकृति का आधार ग्रहण कर बच्चों में भावी उत्तम नागरिकों के मूल्यों का पोषण करते हैं। बाल कविताओं का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को ऐसा परिवेश प्रदान करना है, जो उन्हें सामाजिक–मानवीय मूल्यों का ज्ञान सरल–सहज एवं व्यवहारिक शब्दावली के माध्यम से दे सके। बालक–बालिकाओं में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों यथा त्याग, सत्य, निष्ठा, समर्पण, परमार्थ, सामाजिक समझ इत्यादि भावों को विकसित करना बाल काव्य के उद्देश्य हैं।

बाल कविता लिखने वाले साहित्यकार प्रायः अपनी रचनाओं के माध्यम से बच्चों के मन की बातें कहते हैं। साथ ही आस–पास के परिवेश से जुड़ी बातों का, जानकारियों को लघु कलेवर की कविताओं में व्यक्त करते हैं। यह लघु कलेवर की कविताएँ बाल मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ जाती हैं। जीवन पर्यन्त हम सभी बाल अवस्था में पढ़ी हुई कविताओं को यथा चल रे मटके टम्मक टू, चींटी होती सबसे छोटी ख़ुद से बड़ा वज़न ये ढोती, इब्नबतूता पहन के जूता निकल पड़े तूफ़ान में, बीती विभावरी जाग री, अक्कड़–बक्कड़ लाल बुझक्कड़ आदि अनगिनत कविताओं को आजीवन स्मृति पटल पर अंकित पाते हैं।

मुख्य शब्द – विषय प्रवेश, बाल साहित्य के प्रारम्भिक सूत्र, लोक भाषा में बालगीत, हिन्दी बाल साहित्य का विभाजन, आदियुग (..... से 1850 तक), भारतेन्दु युग (1850 से 1900 तक), पूर्व स्वतंत्रता युग (1901 से 1947 तक) बाल कविता, उपसंहार।

बाल साहित्य बहुत संवेदनशील विषयों, दायित्त्व बोध और दूरदर्शी दृष्टि की माँग करता है। आम साहित्य से इतर बाल साहित्य में भाषा, पात्र, विषय–वस्तु, प्रस्तुतीकरण, दूरगामी प्रभाव इत्यादि गुणों की अति महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि यह बालक–बालिकाओं के चरित्र निर्माण का आधार होता है। एक अच्छा सामाजिक–साहित्यिक परिवेश बच्चों में मूल्य चेतना की प्रेरणा जागृत करने में सहायक होता है। बाल काव्य लिखने वाले कवि–कवयित्री सदैव उच्च गुणवत्तायुक्त विषय सामग्री एवं प्रकृति का आधार ग्रहण कर बच्चों में भावी उत्तम नागरिकों के मूल्यों का पोषण करते हैं। बाल कविताओं का प्राथमिक उद्देश्य

बच्चों को ऐसा परिवेश प्रदान करना है, जो उन्हें सामाजिक–मानवीय मूल्यों का ज्ञान सरल–सहज एवं व्यवहारिक शब्दावली के माध्यम से दे सके। बालक–बालिकाओं में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों यथा त्याग, सत्य, निष्ठा, समर्पण, परमार्थ, सामाजिक समझ इत्यादि भावों को विकसित करना बाल काव्य के उद्देश्य हैं।

बाल कविता लिखने वाले साहित्यकार प्रायः अपनी रचनाओं के माध्यम से बच्चों के मन की बातें कहते हैं। साथ ही आस–पास के परिवेश से जुड़ी बातों का, जानकारियों को लघु कलेवर की कविताओं में व्यक्त करते हैं। यह लघु कलेवर की कविताएँ बाल मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ जाती हैं। जीवन पर्यन्त हम सभी बाल अवस्था में पढ़ी हुई कविताओं को यथा चल रे मटके टम्मक टू, चींटी होती सबसे छोटी ख़ुद से बड़ा वज़न ये ढोती, इब्नबतूता पहन के जूता निकल पड़े तूफ़ान में, बीती विभावरी जाग री, अक्कड़–बक्कड़ लाल बुझक्कड़ आदि अनगिनत कविताओं को आजीवन स्मृति पटल पर अंकित पाते हैं।

प्राचीन काल से ही भारत वर्ष में पंचतंत्र, हितोपदेश, वृहत्कथा, गुणाढ्य कथा तथा कथा सरित्सागर आदि के रूप में बाल साहित्य की एक अति समृद्ध परम्परा रही है। इसके साथ ही लोक कथाओं में एवं दन्त कथाओं में भी बाल साहित्य का प्रचुर भण्डार है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से भी हस्तांरित होता चला आ रहा है। इसी क्रम में विक्रम वेताल की कथा, बीरबल, तेनालीराम, हातिमताई, लाल बुझक्कड़ की कथा आदि ग्रामीण अंचलों से ले कर शहरों तक बच्चों को कण्ठस्थ हैं और आये दिन एक–दूसरे से कही–सुनी जाती हैं। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने बाल काव्य का मूल स्रोत लोक साहित्य को माना है। लोक परम्पराएँ, लोक विश्वास एवं लोक में प्रचलित उत्सव आदि अत्यधिक प्रेरक और आकर्षक होते हैं। इन को आधार बना कर लिखी गयी कोमलकान्त रचनाएँ बाल साहित्य का रूप ग्रहण कर लेतीं हैं। सहज लोक विश्वासों से अनुप्राणित सरल–सरस रचनाएँ बच्चों को प्रेरणा प्रदान करती हैं। डॉ. देवसरे के अनुसार, ''लोकजीवन में व्याप्त विश्वासों, परम्पराओं तथा अनुभवों ने जिन कहानियों एवं गीतों को जन्म दिया, वे सभी वर्गों को उनकी रुचियों और आयु के अनुसार मनोरंजन और ज्ञान देते रहे हैं। वे विश्वास, परम्पराएँ तथा अनुभव जब भी बदले, वहाँ नयी रचना को जन्म मिला। इस तरह कहानियों और गीतों का एक बहुत बड़ा भण्डार तैयार होता रहा।''[1]

लोक की सहज–सरल जीवनधारा अत्यन्त स्वाभाविक, मौलिक और प्रकृति समन्वित होती है, कि अनायास ही इसकी विभिन्न छवियों के चित्र बाल काव्य का रूप धारण कर लेते हैं। यथा धरती, घास–फूस, पौधे, फूल, तितलियाँ, चिड़िया, बादल, झाड़, नदियाँ, तालाब, टिड्डे, जुगनू, खेत, खलिहान, वर्षा, हिमपात, आकाश, प्रातःकाल, सायंकाल आदि–आदि सब अपना अस्तित्त्व रखते हैं। इनका वर्णन बालक–बालिकाओं की स्वाभाविक रुचि का उन्मेष करता है। लोक साहित्य की पृष्ठभूमि में हिन्दी बाल काव्य अवधी, कन्नौजी, छत्तीसगढ़ी, निमाड़ी, बुन्देली, मालवी, भोजपुरी, संथाली, बघेली, गुजराती इत्यादि भाषाओं में प्रकाश में आता है। अवधी भाषा की यह कविता मनोरंजन के साथ पोषण सम्बन्धी ज्ञान भी प्रदान करती है–

''चन्दा मामा धाइ आवा
धुपाइ आवा
टाटी व्योंग देत आवा
घी का लोंदा लेत आवा
भैया के मुँह में डारिदे
घुटूक से।''2

बच्चों की खेलकूद की गतिविधियों का वर्णन भी इन कविताओं की विषय वस्तु रही है–

''अक्कड़ बक्कड़ बम्बे दो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
बाग झूलें बगझुलियाँ झूलें
सावन मास कोलइंदा फूलें
फूल–फूल फुलवाई को
बाबा जी की बारी को
हमका दीन्हेनि कच्ची
अपनी लीन्हेनि पक्की
पट्ट घोड़ा पानी पी जानी है।''3

खेल–खेल में ही बच्चों को सामान्य ज्ञान देना इन कविताओं की विशेषता है। परम्परा रूप में प्राप्त इन गीतों का बच्चे भले ही अर्थ न समझ पायें किन्तु ध्वनि के आधार पर उन्हें किसी निहितार्थ से अवश्य परिचित करा दिया जाता है। जानवरों का परिचय भी इनके माध्यम से दिया जाता है–

''चेउँ मेउँ चेउँ मेउँ
चेउँ मेउँ चेउँ मेउँ
हुर्र बिलइया..''4

विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रीय भाषाओं, बोलियों में भी प्रचुर मात्रा में बाल काव्य प्राप्त होता है। छत्तीसगढ़ी भाषा में आदिवासी बहुल क्षेत्र में बालक को 'बाबू' कहा जाता है। लोरियों में इसका प्रयोग बड़े मनोरम ढंग से किया गया है–

''निंदिया तोला आवे रे, निंदिया तोला आवे रे।
सुति जावे सुति जावे, बाबू सुति जावे रे।
झनि रोवे झनि रोवेल बाबू झनि रोवे रे।
तोर दाई गई है बाबू मउहा बिनवे रे।
तोर दादा गई है बाबू खेत कोड़ारे रे।''5

लोक में इस प्रकार व्यवहार में लाये जाने वाले गीत दो रूपों में मिलते हैं। एक वो जो बड़ों के द्वारा गाये जाते हैं और दूसरे वो जो वस्तुतः बालगीत हैं, जिन्हें बच्चे स्वयं ही खेलते हुए मनोरंजन के लिये गाते हैं। निमाड़ी का एक ऐसा गीत दृष्टव्य है–

''हात रे कुतरा हाकी दा।
मारा नाना रहती राखी दा।
नाना जा भई ना कपला गाय।
कोण धुवण मामो मिष्ठवा जाय।
जितो दहि दूद मारो नानी खाय।
आओ न पोरा पोरा रमवा ना।
नानो मारो वहो जमवा ना।
जमीच उठोन नानो बाड़ी मा जाय।
बाड़ी न वनफल तोड़ी न खाय।...''6

हिन्दी की समृद्ध ब्रज और बुन्देली भाषा अपनी कोमलता और माधुर्य के लिये प्रसिद्ध हैं। बाल काव्य भी इनमें विपुल मात्रा में रचा गया है। ब्रज का एक उदाहरण दृष्टव्य है–

''अटकन चटकन
दही चटक्कन
बाबा लाये सात कटोरी,
एक कटोरी फूटी,
ममा की बहु रूठी,
काय बात पै रूठी।
दूध दही पै रूठीं
दूध दही तौ बहुतेरौ
बाको म्हों खायबै कूँ टेढ़ौ।
चींटी लेगौ कै चींटा।....''7

खेल–खेल में गाया जाने वाला बुन्देली भाषा का यह बालगीत भी लोकप्रिय है–

''अल्ल में गई, दल्ल में गई,
दल्ल में से लाकड़ ल्याई
लाकड़ मैंने डुक्की दीनी,
डुक्की मोय कोचो दीनी
कोचो मैंने कुम्हरै दीनी।
कुम्हरा मोय मटकी दीनी।
मटकी मैंने अहीरै दीनीं
अहीर मोय भैंस दीनी
भैंस मैंने राजें दीनी।
राजा मोय रानी दीनी
रानी मैंने बसोरै दीनी।
बसोर मोय ढुलकी दीनी
बाज मोरी ढुलकी टामक टू।
रानी के बदले आई तू।...''8

हिन्दी बाल साहित्य का कुछ विद्वानों द्वारा मोटे तौर पर तीन खण्डों में विभक्त किया गया है। प्रारम्भिक काल, मध्यकाल, आधुनिक काल। प्रारम्भिक काल की समय सीमा 1900 से 1950 तक मानी है, मध्यकाल की समय सीमा 1950 से 2000 तक तथा आधुनिक काल की समय सीमा 2000 से अब तक स्वीकार की गयी है। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने हिन्दी बाल साहित्य को पूर्व भारतेन्दु युग, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, स्वातंत्र्योत्तर युग तथा वर्तमान युग जैसे शीर्षकों में वर्गीकृत किया है। डॉ. परशुराम शुक्ल इस विभाजन को त्रुटिपूर्ण बताते हुए लिखते हैं– ''इस युग विभाजन में आधुनिक युग और वर्तमान युग जैसे युग हैं जो कभी शाश्वत नहीं होते। आधुनिक और वर्तमान दोनों ही लगभग एक जैसे नाम हैं तथा दोनों ही निश्चित रूप से भविष्य में परिवर्तित हो जायेंगे।''9

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे हिन्दी बाल साहित्य को विभाजित करते हुए वर्तमान युग को सन् 1957 से सन् 1967 तक स्वीकार करते हैं। उनके इस ग्रन्थ का प्रकाशन वर्ष 1969 है। वर्तमान युग के स्थान पर समकालीन शब्द निरन्तरता के साथ यथोचित होता क्योंकि यह आगे बढ़ता रहेगा। डॉ. परशुराम शुक्ल हिन्दी बाल साहित्य को इस प्रकार वर्गीकृत करते हैं, '' आदियुग (..... से 1850 तक), भारतेन्दु युग (1850 से 1900 तक), पूर्व स्वतंत्रता युग (1901 से 1947 तक), उत्तर स्वतंत्रता युग (1948 से 1990 तक) तथा प्रयोगवादी युग (1990 से निरन्तर)। भारतेन्दु युग से ही बाल काव्य में मौलिक लेखन प्रारम्भ हुआ है। इसके पूर्व का साहित्य संस्कृत साहित्य की रचनाओं का अनुवाद, लोक प्रचलित गाथाओं का पुनर्कथन ही था। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे इस सम्बन्ध में लिखते हैं, ''उन्होंने इसी सामाजिक चेतना का एक महत्त्वपूर्ण पहलू बालक–बालिकाओं में नवजागरण माना था और इसी उद्देश्य से 'बालबोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन 1 जून 1874 से प्रारम्भ किया था। यद्यपि यह पत्रिका अधिक समय तक नहीं निकली, तथापि इसने हिन्दी में बाल साहित्य रचना को जन्म दिया। यहीं से विशुद्ध हिन्दी बाल साहित्य का विकास प्रारम्भ होता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अनेक ऐसी रचनाएँ लिखीं जिन्होंने तद्युगीन बाल तथा किशोर पीढ़ी को प्रभावित किया और उनके मन पर अपने उद्देश्यों की अमिट छाप छोड़ी।''10

सन् 1882 में स्वयं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा 'बाल दर्पण' नामक पत्रिका के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है। पुनर्जागरण के अग्रदूत, आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने बाल पाठकों स ले कर वृद्ध पाठकों तक में अपनी पैठ बनाने के लिये खड़ी बोली का प्रयोग किया तथा इसके द्वारा उसका विकास, प्रचार–प्रसार और संवर्द्धन किया। भारतेन्दु के साथ ही बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रताप नारायण मिश्र, लाला श्रीनिवास दास ने भी इस युग में बाल काव्य की रचना की। भारतेन्दु युग (1850 से 1900 तक) के पश्चात् द्विवेदी युग अर्थात् पूर्व स्वतंत्रता युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के जैसा महामना प्राप्त हुआ, जिन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य की उत्कृष्टता प्राप्ति के लिये समूचा जीवन होम कर दियां 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादकत्व सन् 1903 में प्रारम्भ करने के पश्चात् उन्होंने इस पत्रिका के माध्यम से लेखकों एवं कवियों की रचनाओं में भाषागत त्रुटियों का परिष्कार ही नहीं किया अपितु भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था की स्वरूप स्थापना, शब्दकोश, अशुद्धियों, लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग इत्यादि कारकों का भी स्थान सुनिश्चित किया। इस काल में बालमुकुन्द गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', कामताप्रसाद गुरु, मन्नन द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी, सुखराम चौबे, विद्याभूषण 'विभु', गिरिजादत्त शुक्ल, श्रीनाथ सिंह, गोपाल शरण सिंह, देवीदत्त शुक्ल, डॉ. रामकुमार वर्मा, रघुनन्दन प्रसाद त्रिपाठी एवं शम्भू दयाल सक्सेना आदि ने बाल काव्य लेखन किया।

इसी युग में लल्ली प्रसाद पाण्डे, माखनलाल चतुर्वेदी, आरसी प्रसाद सिंह, सोहनलाल द्विवेदी, स्वर्ण सहोदर, मूलचन्द्र श्रीवात्री, रामेश्वर गुरु, कुमार हृदय, डॉ. राजेश्वर गुरु, केशवदास पाठक, रामसिंहासन सहाय 'मधुर', रमापति शुक्ल, डॉ. पूरनचन्द्र श्रीवास्तव, देवी दयाल चतुर्वेदी, विद्या भास्कर शुक्ल, बाबूलाल भार्गव, गौरीशंकर लहरी तथा कुंजबिहारी लाल चौबे के नाम प्रमुख हैं।

मैथिलीशरण गुप्त की 'बालसखा' पत्रिका में प्रकाशित एक बाल कविता दृष्टव्य है–

''एक बड़ा सा बन्दर आया, उसने झटपट लैम्प जलाया,
डट कुर्सी पर पुस्तक खोली, आ तब तक मैना यों बोली,
हाज़िर हैं हजूर का घोड़ा, चौं उठाया उसने कोड़ा।
आया तब तक एक बछेरा, चढ़ बन्दर ने उसको फेरा।
टट्टू ने भी किया सपाटा, टट्टी फाँदी चक्कर काटा।...''11

खड़ी बोली हिन्दी के विकास में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का नाम विशिष्ट स्थान रखता है। उनकी बाल कविताओं के संग्रह बालविभव, बालविलास, फूलपत्ते, पथप्रसून, चन्द्रखिलौना तथा खेलतमाशा उल्लेखनीय हैं। उनकी बन्दर के सम्बन्ध में जानकारी देती एक कविता इस प्रकार है–

''देखो लड़कों बन्दर आया, एक मदारी उसको लाया,
उसका है कुछ ढंग निराला, कानों में पहने है बाला,
फटे पुराने रंग बिरंगे, कपड़े हैं उसके वे ढंगे।
मुँह डरावना आँखें छोटी, लम्बी दुम थोड़ी सी मोटी।
भौंह कभी वह मटकाता, आँखों को भी नचाता।
ऐसा कभी किलकिलाता है, मानों अभी काट खाता ह।
दाँतों को है कभी दिखाता, कूदफाँद है कभी मचाता।
कभी घुड़कता है मुँह बाकर, सब लोगों को बहुत डराकर।...''12

कामता प्रसाद गुरु ने 'बालसखा' पत्रिका के लिये बाल कविताएँ लिखीं तो वहीं सुखराम प्रसाद चौबे ने प्रभावपूर्ण बालकविताएँ, चुटकुले, पहेलियों आदि के साथ ही छोटे बच्चों के लिये पाठ्य पुस्तकें भी लिखीं। देशभक्ति परक उनकी एक कविता इस प्रकार है–

''संसार भर में ऊँचा, प्यारा मुकुट हमारा।
मनो पड़ा गगन है, उसका लिये सहारा।
यह है प्रमाण इसका, थे हम बड़ जगत में।
होवे न अब भले ही, अवतार सब लिये हैं।
भगवान ने यहाँ ही, अवतार सब लिये हैं।
बस अब विनय हमारी, तुम से प्रभो यही है।
उन्नति के मार्ग में यह, भारत बढ़े हमारा।...''13

पं. रामनरेश त्रिपाठी बालोपयोगी साहित्य के एक सुविख्यात कवि हैं। इन्होंने 'वानर' शीर्षक से बाल पत्रिका का प्रकाशन भी किया था। ठाकुर श्रीनाथ सिंह अपनी मनोरंजक कविताओं से बाल मनोवृत्तियों का पोषण करते हैं। इन्होंने 'बाल सखा', 'शिशु', 'दीदी', 'बालबोध' जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य भी किया। इनका बाल कविताओं का संग्रह 'बालकवितावली' बहुत चर्चित रहा। इनकी एक सुप्रसिद्ध कविता बच्चों को नैतिक मूल्यों की प्रेरणा देती है–

''फूलों से नित हँसना सीखो, भँवरों से नित गाना।
फल से लदी डालियों से नित सीखो सीस झुकाना।
सीख हवा के झोंकों से लो कोमल भाव बहाना।
दूध तथा पानी से सीखो मिलना और मिलाना।
सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो सबको गले लगाना।
वर्षा की बूँदों से सीखो सबका हृदय जुड़ाना।
मेंहदी से सीखो पिस कर भी अपना रंग चढ़ाना।
दीपक से सीखो जितना हो सके अंधेरा हरना।
.....
अपने गुरु से सीखो बच्चों उत्तम विद्या पढ़ना।''14

इस कविता की भाषा इतनी सरल और प्रवाहपूर्ण है, कि बच्चों को सहज ही कण्ठस्थ हो जाती है। यह बच्चों में उच्चतम मानवीय मूल्यों का विकास करती है। डॉ. रामकुमार वर्मा हिन्दी साहित्य के स्वनाम धन्य हस्ताक्षर हैं। आधुनिक हिन्दी गद्य की विधाओं में सक्रिय योगदान के साथ ही उन्होंने बच्चों में उत्सुकता, जिज्ञासा, प्राकृतिक क्रिया–कलापों की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास भी किया है–

''किसन ये मोती बिखराये।
इतने फूल कहाँ से आये।
चमक रहे हें कितने तारे।
चन्दा के हैं लाल दुलारे।
हँस–हँस कर वे क्या कहते हैं।
हम तुमसे ऊपर रहते हैं।
पर हमको यह जग ही भाता।
क्योंकि यहाँ पर हैं पितु माता।...''15

आधुनिक काव्य के क्रान्तिकारी और ओजस्वी कवि 'एक भारतीय आत्मा' राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी ने बच्चों के लिये भी प्रेरक कविताएँ लिखीं।

''समय जगाता हम सबको, झटपट जग जाना ही होगा।
देश विश्व सिद्धान्त कार्य में निर्भय लग जाना ही होगा।
दृढ़ करके मस्तिष्क मनस्वी बन कर वीर कहाना होगा।
पूर्ण ज्ञान सर्वेश चरण पर जीवन पुष्प चढ़ाना होगा।....''16

प्रसिद्ध कवि आरसी प्रसाद सिंह ने बाल चित्त वृत्तियों का सूक्ष्म चिन्तन–मनन करके बाल मनोभावों का मनोरम वर्णन किया है। पत्रिका 'चन्दा माम' एवं 'चित्रों की लोरियाँ' इनके काव्य संग्रह हैं। इनकी बाल कविताएँ बच्चों को सहज आकर्षित करती हं।

"मेरा घोड़ा बड़ा उड़ाका।
सीधा सादा तिरछा बांका।
उड़े सीट पर राष्ट्र पताका।
मैं सवार भी मिला बला का।
चल रे घोड़े टिक टिक टिक।...."17

एवं ऋतु परिवर्तनों को, सामाजिक पर्वों को, पर्यावरण के स्वरूप को भी उन्होंने उकेरा है–

"सावन आया, मनहर सावन,
मनहर सावन, सरस सुहावन।
आम ख़ूब इस साल फले हैं।
लड़के सब उस ओर चले हैं।
कुछ कागद की नाव बहाते।
कोई गाते ही निकले हैं।
उछल–कूद कर प्राण सुहावन।
सावन आया सरस सुहावन।...."18

कवि सोहन लाल द्विवेदी ने न केवल राष्ट्रीय भाव से ओत–प्रोत बाल कविताएँ लिखीं अपितु ग्रामीण जीवन और समानता एवं समरसता का संचार करने वाली कविताओं का सृजन भी किया।

"बड़ी जाति में होने से ही,
बड़ा न कोई हो पाता।
जब तक नहीं गुण लाता,
नहीं बड़े गुण अपनाता।...."19

इसी प्रकार कोरे भाग्यवाद और समाज में फैले अंधविश्वासों का विरोध करते हुए वे परिश्रम और पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा करते हैं–

"देखो नहीं हाथ की रेखा, पलटो मत पन्ना पोथी।
मीन मेष कुछ कर न सकेगा, ये सारी बातें थोथी।
नहीं भाग्य का मुख देखो, तुम अपने बनो विधाता आप।
चलो बढ़ो अपने पाँवों से, लो सारी दुनिया को नाप।...."20

'क्या लिखूँ' जैसा बाल मन के सहज प्रश्नों से युक्त निबन्ध लिखने वाले पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी इलाहाबाद के इण्डियन प्रेस में कार्य करते थे। उनकी यह कविता सरलता के साथ ही मनोरंजनपूर्ण भी है–

"बुढ़िया चला रही थी चक्की, पूरे साठ वर्ष की पक्की।
दोने में थी रखी मिठाई, उस पर उड़ कर मक्खी आई।
बुढ़िया बांस उठा कर दौड़ी, बिल्ली खाने लगी पकौड़ी।
झपटी बुढ़िया घर के अन्दर, कुत्ता भागा रोटी ले कर।
बुढ़िया निकली तब फिर बाहर, बकरा घुसा तुरन्त ही भीतर।
बुढ़िया चली गिर गया मटका, तब तक वह बकरा भी सटका।
बुढ़िया बैठ गयी तब थक कर, सौंप दिया बिल्ली को ही घर।..."21

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में स्पष्ट हो जाता है, कि हिन्दी में बाल कविता का इतिहास अत्यन्त प्राचीन एवं समृद्ध है। इस प्रारम्भिक चरण से आगे बाल कविता भी समयानुकूल नित आधुनिक होती चली गयी। 1950 से 2000 तक के मध्यकाल में हिंदी बाल साहित्य के विकास ने गति पकड़ ली। इस समय के रचनाकारों ने समृद्ध बाल साहित्य की आवश्यकता एवं उपादेयता को महसूस किया तथा इसकी समृद्धि तथा विकास के लिये प्राणप्रण से जुट गये। इस अवधि में हिंदी बाल साहित्य को एक निश्चित एवं स्वतंत्र स्वरूप प्राप्त हुआ। उपर्युक्त रचनाकारों ने हिंदी बाल साहित्य की रचना को एक चुनौती के रूप में लिया। उनके पास बाल साहित्य को लेकर एक सुनिश्चित दृष्टि और उद्देश्य था। यही कारण है कि गत शताब्दी के छठे दशक के बाद से हिंदी बाल साहित्य ने गुण और परिमाण दोनो हो दृष्टि से उल्लेखनीय प्रगति की।

पिछले लगभग तीन दशक का समय विज्ञान, तकनीक, संचार और सूचना के क्षेत्र में क्रांति का समय रहा है। विज्ञान और टेक्नालांजी न सिर्फ हमारे सामाजिक और पारिवारिक बल्कि वैयक्तिक जीवन में भी काफो गहरा हस्तक्षेप किया है। आज का बच्चा होश संभालते ही टी. वी., कम्प्यूटर, ए.सी., फ्रिज और मोबाइल जैसे उपकरणों से साक्षात्कार करता है। अतः उसे परी, अप्सरा, भूत–प्रेत और दैवीय चमत्कार सरीखी काल्पनिक बातों से नहीं बहलाया जा सकता। हिंदी के बाल साहित्यकार इस तथ्य को बखूबी समझते हैं और यही कारण है कि हिंदी में आज वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। शुकदेव प्रसाद, जयंत विष्णु नार्लीकर, विजयकुमार उपाध्याय, गुणाकर मुले तथा लल्लन कुमार प्रसाद जैसे रचनाकारों ने विविध विधाओं में विपुल मात्रा में मौलिक रोचक तथा उपयोगी विज्ञान बाल साहित्य की रचना की है। इनके अतिरिक्त संजीव जायसवाल 'संजय', अरविंद मिश्र तथा जाकिर अली 'रजनीश' ने भी वैज्ञानिक विषयों को लेकर कविताओं कहानियों उपन्यासों तथा वैज्ञानिक लेखों आदि की रचना की है। हिन्दी की बाल कविताओं का साहित्य उत्तरोत्तर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर है।

सहायक ग्रन्थ/आलेख

1. विक्रम डॉ. सुरेन्द्र (1991) हिन्दी बाल पत्रकारिता : उद्भव और विकास, साहित्य वाणी प्रकाशन, इलाहाबाद
2. अनुभूति–हिन्दी डॉट ओआरजी वेबसाइट का आलेख – हिंदी बाल साहित्य का इतिहास, अखिलेश श्रीवास्तव चमन, 08 नवम्बर 2010

संदर्भ ग्रन्थ

1. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 69
2. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 92
3. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 93
4. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 94
5. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 96
6. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 97
7. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 100
8. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 101

9. शुक्ल डॉ. परशुराम (2016) हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, पृ. 09
10. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 118
11. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 139
12. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 140
13. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 144
14. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 149
15. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 153
16. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 167
17. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 168
18. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 168
19. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 170
20. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 170
21. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 183